Purusha Suktam- सम्पूर्ण मंत्र पाठ

(प्रत्येक मंत्र चार रूपों में दिया गया है: (1) मूल संस्कृत देवनागरी | (2) तेलुगु लिपि | (3) English Transliteration | (4) हिंदी अर्थ)

मंगलाचरण

संस्कृत (Devanagari):

ॐ श्री गुरुभ्यो नमः ।
हरिः ॐ ।
ॐ तच्छं योरावृणीमहे ।
गातुं यज्ञाय ।
गातुं यज्ञपतये ।
दैवी स्वस्तिरस्तु नः ।
स्वस्तिर्मानुषेभ्यः ।
ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम् ।
शं नो अस्तु द्विपदे ।
शं चतुष्पदे ।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

తెలుగు లిప్యంతరణ (Telugu Lipi):

ఓం శ్రీ గురుభ్యో నమః ।
హరిః ఓం ।
ఓం తచ్చం యోరావృణీమహే ।
గాతుం యజ్ఞాయ ।
గాతుం యజ్ఞపతయే ।
దైవీ స్వస్తిరస్తు నః ।
స్వస్తిర్మానుషేభ్యః ।
ఊర్ధ్వం జిగాతు భేషజమ్ ।
శం నో అస్తు ద్విపదే ।
శం చతుష్పదే ।
ఓం శాంతిః శాంతిః శాంతిః ।।

English Transliteration:

Om Shri Gurubhyo Namah
Harih Om
Om Tachcham Yoravrinimahe

Gatun Yajnaya
Gatun Yajnapataye
Daivi Svastir Astu Nah
Svastir Manushebhyah
Urdhvam Jigatu Bheshajam
Sham No Astu Dvipade
Sham Chatushpade
Om Shantih Shantih Shantih

हिंदी अर्थ: हम उस परमात्मा से प्रार्थना करते हैं जो सुख और कल्याण प्रदान करते हैं। यज्ञ के लिए मार्ग मिले। यज्ञपति को मार्ग मिले। दिव्य कल्याण हो। मनुष्यों का कल्याण हो। औषधियां ऊपर बढ़ें। दो पैर वाले और चार पैर वाले सभी प्राणियों का मंगल हो। ॐ शांति शांति शांति।

मंत्र 1

संस्कृत (Devanagari):

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिं विश्वतः स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ।।1।।

తెలుగు లిప్యంతరణ (Telugu Lipi):

సహస్రశీర్షా పురుషః సహస్రాక్షః సహస్రపాత్ ।
స భూమిం విశ్వతః స్పృత్వాత్యతిష్ఠద్దశాంగులమ్ ।।1।।

English Transliteration:

Sahasra-shirsha Purushah Sahasrakshah Sahasrapat |
Sa Bhumim Vishvatah Spritvaa-tyatishthat Dashangulam ||1||

हिंदी अर्थ: उस परम पुरुष के असंख्य मस्तक हैं, असंख्य नेत्र हैं, असंख्य पाद हैं। वे इस सम्पूर्ण पृथ्वी (सृष्टि) को सभी ओर से आवृत करके दस अंगुल परे (हृदय से परे, अनंत में) स्थित हैं।

मंत्र 2

संस्कृत (Devanagari):

पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ।।2।।

తెలుగు లిప్యంతరణ (Telugu Lipi):

పురుష ఏవేదం సర్వం యద్భూతం యచ్చ భవ్యమ్ ।
ఉతామృతత్వస్యేశానో యదన్నేనాతిరోహతి ।।2।।

English Transliteration:

Purusha Evedam Sarvam Yad Bhutam Yachcha Bhavyam |
Utamritatvasyeshano Yad Annena Atirohati ||2||

हिंदी अर्थ: यह पुरुष ही सब कुछ है — जो कुछ हो चुका है और जो भविष्य में होने वाला है, वह सब वही हैं। वे अमरत्व के भी स्वामी हैं जो अन्न (जगत के समस्त भोग्य पदार्थों) से परे और ऊपर स्थित हैं।

मंत्र 3

संस्कृत (Devanagari):

एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ।।3।।

తెలుగు లిప్యంతరణ (Telugu Lipi):

ఏతావానస్య మహిమాతో జ్యాయాంశ్చ పూరుషః ।
పాదోఽస్య విశ్వా భూతాని త్రిపాదస్యామృతం దివి ।।3।।

English Transliteration:

Etavan Asya Mahima Ato Jyayamscha Purushah |
Pado-asya Vishva Bhutani Tripad Asyamritam Divi ||3||

हिंदी अर्थ: इतनी तो उनकी महिमा है — और उससे भी बढ़कर हैं पुरुष। उनका केवल एक पाद (एक चौथाई) ही यह समस्त प्राणी-जगत है, जबकि तीन पाद (तीन चौथाई) स्वर्ग में अमृत रूप में विराजमान हैं।

मंत्र 4

संस्कृत (Devanagari):

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ।
ततो विष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशने अभि ।।4।।

తెలుగు లిప్యంతరణ (Telugu Lipi):

త్రిపాదూర్ధ్వ ఉదైత్పురుషః పాదోఽస్యేహాభవత్పునః ।
తతో విష్వంగ్వ్యక్రామత్సాశనానశనే అభి ।।4।।

English Transliteration:

Tripad Urdhva Udait Purushah Pado-asyehabhavat Punah |
Tato Vishvang Vyakramat Sashanashane Abhi ||4||

हिंदी अर्थ: तीन पाद वाले पुरुष ऊपर प्रकाशित हुए और एक पाद यहां इस सृष्टि में पुनः प्रकट हुआ। वहां से वे चेतन और अचेतन — दोनों में सर्वत्र व्याप्त हो गए।

मंत्र 5

संस्कृत (Devanagari):

तस्माद्विराडजायत विराजो अधि पूरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ।।5।।

తెలుగు లిప్యంతరణ (Telugu Lipi):

తస్మాద్విరాడజాయత విరాజో అధి పూరుషః ।
స జాతో అత్యరిచ్యత పశ్చాద్భూమిమథో పురః ।।5।।

English Transliteration:

Tasmad Virad Ajayata Virajo Adhi Purushah |
Sa Jato Atyarichyata Paschad Bhumim Atho Purah ||5||

हिंदी अर्थ: उस परम पुरुष से विराट (ब्रह्मांडीय देह) उत्पन्न हुआ और विराट से पुनः पुरुष प्रकट हुए। जन्म लेकर वे और अधिक विस्तृत हो गए — पृथ्वी के आगे और पीछे सर्वत्र।

मंत्र 6

संस्कृत (Devanagari):

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ।।6।।

తెలుగు లిప్యంతరణ (Telugu Lipi):

యత్పురుషేణ హవిషా దేవా యజ్ఞమతన్వత ।
వసన్తో అస్యాసీదాజ్యం గ్రీష్మ ఇధ్మః శరద్ధవిః ।।6।।

English Transliteration:

Yat Purushena Havisha Deva Yajnam Atanvata |
Vasanto Asyasidajyam Grishma Idhmah Sharad Havih ||6||

हिंदी अर्थ: जब देवताओं ने पुरुष को हवि बनाकर यज्ञ किया, तब वसंत ऋतु उसका घी थी, ग्रीष्म ऋतु समिधा (ईंधन) थी और शरद ऋतु हवि (आहुति) थी।

मंत्र 7

संस्कृत (Devanagari):

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ।।7।।

తెలుగు లిప్యంతరణ (Telugu Lipi):

తం యజ్ఞం బర్హిషి ప్రౌక్షన్పురుషం జాతమగ్రతః ।
తేన దేవా అయజన్త సాధ్యా ఋషయశ్చ యే ।।7।।

English Transliteration:

Tam Yajnam Barhishi Praukshan Purusham Jatam Agratah |
Tena Deva Ayajanta Sadhya Rishayashcha Ye ||7||

हिंदी अर्थ: उस यज्ञ में कुशा पर सृष्टि के आदि में उत्पन्न उस पुरुष को सींचा गया। उसी पुरुष के माध्यम से देवताओं ने, साध्यों ने और ऋषियों ने यज्ञ किया।

मंत्र 8

संस्कृत (Devanagari):

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशून्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान्ग्राम्याश्च ये ।।8।।

తెలుగు లిప్యంతరణ (Telugu Lipi):

తస్మాద్యజ్ఞాత్సర్వహుతః సంభృతం పృషదాజ్యమ్ ।
పశూంస్తాంశ్చక్రే వాయవ్యానారణ్యాన్గ్రామ్యాశ్చ యే ।।8।।

English Transliteration:

Tasmad Yajnat Sarvahutah Sambhritam Prishadajyam |
Pashums Tamshchakre Vayavyan Aranyan Gramyashcha Ye ||8||

हिंदी अर्थ: उस सर्वहुत यज्ञ से दही मिश्रित घी (पृषदाज्य) एकत्र हुआ। उससे आकाश में विचरने वाले, वन के और ग्राम के – सभी प्रकार के पशुओं की रचना हुई।

मंत्र 9

संस्कृत (Devanagari):

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ।।9।।

తెలుగు లిప్యంతరణ (Telugu Lipi):

తస్మాద్యజ్ఞాత్సర్వహుత ఋచః సామాని జజ్ఞిరే ।
ఛన్దాంసి జజ్ఞిరే తస్మాద్యజుస్తస్మాదజాయత ।।9।।

English Transliteration:

Tasmad Yajnat Sarvahuta Richah Samani Jajnire |
Chhandamsi Jajnire Tasmad Yajus Tasmad Ajayata ||9||

हिंदी अर्थ: उस सर्वहुत यज्ञ से ऋचाएं और सामगान उत्पन्न हुए। उससे समस्त छंद उत्पन्न हुए और उसी से यजुर्वेद की उत्पत्ति हुई।

मंत्र 10

संस्कृत (Devanagari):

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ।।10।।

తెలుగు లిప్యంతరణ (Telugu Lipi):

తస్మాదశ్వా అజాయన్త యే కే చోభయాదతః ।
గావో హ జజ్ఞిరే తస్మాత్తస్మాజ్జాతా అజావయః ।।10।।

English Transliteration:

Tasmad Ashva Ajayanta Ye Ke Chobhayadatah |
Gavo Ha Jajnire Tasmat Tasmaj Jata Ajavayah ||10||

हिंदी अर्थ: उससे अश्व (घोड़े) उत्पन्न हुए और दोनों जबड़ों में दांत वाले सभी पशु उत्पन्न हुए। उससे गौएं उत्पन्न हुईं और उससे ही बकरियां तथा भेड़ें उत्पन्न हुईं।

मंत्र 11

संस्कृत (Devanagari):

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते ।।11।।

తెలుగు లిప్యంతరణ (Telugu Lipi):

యత్పురుషం వ్యదధుః కతిధా వ్యకల్పయన్ ।
ముఖం కిమస్య కౌ బాహూ కా ఊరూ పాదా ఉచ్యేతే ।।11।।

English Transliteration:

Yat Purusham Vyadadhuh Katidha Vyakalpayan |
Mukham Kim Asya Kau Bahu Ka Uru Pada Uchyete ||11||

हिंदी अर्थ: जब उन्होंने उस पुरुष को विभाजित किया, तो कितने भागों में उन्हें विभक्त किया? उनका मुख क्या था? उनकी बाहुएं क्या थीं? ऊरु (जांघें) और पाद (पैर) क्या कहे जाते हैं?

मंत्र 12

संस्कृत (Devanagari):

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ।।12।।

తెలుగు లిప్యంతరణ (Telugu Lipi):

బ్రాహ్మణోఽస్య ముఖమాసీద్బాహూ రాజన్యః కృతః ।
ఊరూ తదస్య యద్వైశ్యః పద్భ్యాం శూద్రో అజాయత ।।12।।

English Transliteration:

Brahmano-asya Mukham Asid Bahu Rajanyah Kritah |
Uru Tad Asya Yad Vaishyah Padbhyam Shudro Ajayata ||12||

हिंदी अर्थ: ब्राह्मण उसका मुख था (ज्ञान और वाणी के प्रतीक), बाहुओं से क्षत्रिय बना (शक्ति और रक्षा का प्रतीक)। उनकी जांघें वैश्य थीं (पोषण और व्यापार का प्रतीक), पैरों से शूद्र उत्पन्न हुए (सेवा और आधार का प्रतीक)।

मंत्र 13

संस्कृत (Devanagari):

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत ।।13।।

తెలుగు లిప్యంతరణ (Telugu Lipi):

చంద్రమా మనసో జాతశ్చక్షోః సూర్యో అజాయత ।
ముఖాదిన్ద్రశ్చాగ్నిశ్చ ప్రాణాద్వాయురజాయత ।।13।।

English Transliteration:

Chandrama Manaso Jatash Chakshoh Suryo Ajayata |
Mukhad Indrash Chagnish Cha Pranad Vayur Ajayata ||13||

हिंदी अर्थ: चंद्रमा उनके मन से उत्पन्न हुआ और नेत्रों से सूर्य की उत्पत्ति हुई। मुख से इंद्र और अग्नि प्रकट हुए तथा प्राण से वायु उत्पन्न हुआ।

मंत्र 14

संस्कृत (Devanagari):

नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन् ।।14।।

తెలుగు లిప్యంతరణ (Telugu Lipi):

నాభ్యా ఆసీదన్తరిక్షం శీర్ష్ణో ద్యౌః సమవర్తత ।
పద్భ్యాం భూమిర్దిశః శ్రోత్రాత్తథా లోకాంఽ అకల్పయన్ ।।14।।

English Transliteration:

Nabhya Asid Antarikksham Shirshno Dyauh Samavartata |
Padbhyam Bhumir Dishah Shrotrat Tatha Lokan Akalpayan ||14||

हिंदी अर्थ: नाभि से अंतरिक्ष उत्पन्न हुआ, मस्तक से स्वर्गलोक प्रकट हुआ। पैरों से पृथ्वी और कानों से दिशाएं उत्पन्न हुईं — इस प्रकार समस्त लोकों की रचना की गई।

मंत्र 15

संस्कृत (Devanagari):

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम् ।।15।।

తెలుగు లిప్యంతరణ (Telugu Lipi):

సప్తాస్యాసన్పరిధయస్త్రిః సప్త సమిధః కృతాః ।
దేవా యద్యజ్ఞం తన్వానా అబధ్నన్పురుషం పశుమ్ ।।15।।

English Transliteration:

Saptasyasan Paridhayah Trih Sapta Samidhah Kritah |
Deva Yad Yajnam Tanvana Abadhnnan Purusham Pashum ||15||

हिंदी अर्थ: यज्ञवेदि की सात परिधियां थीं और इक्कीस (तीन बार सात) समिधाएं बनाई गईं। देवों ने जब यज्ञ का विस्तार किया तब उन्होंने पुरुष को यज्ञपशु के रूप में बांधा।

मंत्र 16 (अंतिम मंत्र)

संस्कृत (Devanagari):

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।।16।।

తెలుగు లిప్యంతరణ (Telugu Lipi):

యజ్ఞేన యజ్ఞమయజన్త దేవాస్తాని ధర్మాణి ప్రథమాన్యాసన్ ।
తే హ నాకం మహిమానః సచన్త యత్ర పూర్వే సాధ్యాః సన్తి దేవాః ।।16।।

English Transliteration:

Yajnena Yajnam Ayajanta Devastani Dharmani Prathamanyasan |
Te Ha Nakam Mahimanah Sachanta Yatra Purve Sadhyah Santi Devah ||16||

हिंदी अर्थ: देवताओं ने यज्ञ के द्वारा यज्ञ की पूजा की। ये ही सबसे प्रथम धर्म थे। वे महिमावान देवता उस स्वर्गलोक को प्राप्त हुए जहां पूर्वकाल के साध्य देव आज भी विराजमान हैं।